भारत के राष्ट्रीय इतिहास में गाँधीजी ही ऐसे नायक हैं, जिनकी किंवदन्तियाँ युगों तक प्रसिद्ध रहेंगी। गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन में प्राण फूँक दिया। निकटस्थित लोगों में उत्साह का संचार किया, भयभीत जन-समूह को निर्भीक बनाया और जिस कार्य को 50 हजार सिपाही नहीं कर सके, उसको गाँधीजी ने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के अस्त्र-शस्त्रों से कर दिखाया। गाँधीजी ने 'करो या मरो' का नारा देकर भारतीयों को एक सूत्र में बाँधा और पाशविक शक्ति पर आधारित ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता को भारतीय राष्ट्रीयता के सामने घुटने टेकने को विवश किया। वे आदर्श भारत का स्वप्न देखते थे और राम राज्य की कल्पना करते थे। गाँधीजी के अथक प्रयासों से तो भारत को आजादी मिली, परन्तु गाँधीजी भारत का विभाजन नहीं रोक सके।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमराँव
दिनांक 28/08/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

कार्यक्रम इतना प्रभावशाली रहा कि इससे शासन बौखला उठा। (2)

(iv) रचनात्मक कार्य (Constructive work) :- गाँधीजी द्वारा संचालित राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति नहीं बल्कि भारतीय जनता की गिरी हुई सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति सुधारना था। इसके लिए गाँधीजी ने नारियों के उत्थान, गृह उद्योग का प्रचार, परदा और मद्य निषेध आदि रचनात्मक कार्यों को अपनाया। गाँधीजी ने इन रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर 'सर्वोदय समाज' की स्थापना चाही।

(v) साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता के जहर को समाप्त करने का प्रयत्न (To end the poison of Communalism and Untouchability) :- गाँधीजी केवल एक सक्षम राजनीतिज्ञ ही नहीं, बल्कि एक कुशल एवं व्यवहारिक समाज सुधारक भी थे। गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन की दो बाधाओं - साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता को खत्म करने का अनवरत प्रयत्न किया। वे साम्प्रदायिकता को हिन्दू समाज का विष और अस्पृश्यता को इस समाज का कलंक मानते थे। अतः इन दोनों को खत्म करने के लिए उन्होंने आजीवन प्रयत्न किया और खासकर साम्प्रदायिकता के विष को खत्म करने के प्रयत्नों में ही 30 जनवरी, 1948 को अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(vi) राजनीति का आध्यात्मीकरण (Spiritualization of politics) राजनीति का आध्यात्मीकरण गाँधीजी की राजनीति का सबसे अधिक महत्वपूर्ण देन है। गाँधीजी धर्म से पृथक राजनीति को मृत्युजाल मानते थे और धर्म तथा राजनीति में कोई अंतर नहीं मानते थे। गाँधीजी ने धर्म और ईश्वर में विश्वास तथा राजनीति में सत्य और अहिंसा का प्रयोग करके राजनीति को एक नया आयाम दिया।

(vii) राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व (Leadership of National Movement) :- गाँधीजी ने 1920 से 1947 तक भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का पथ प्रदर्शन और सफल नेतृत्व किया। गाँधीजी के नेतृत्व से राष्ट्रीय आंदोलन में नई जान आ गई। गाँधीजी ने स्वतंत्रता के लिए भारतीयों को प्रेरित किया जिससे भारतीय स्वतंत्रता पाने के लिए उत्तेजित हुए और कारवास आंदोलनकारियों के तीर्थ स्थल बन गए। उन्होंने हमेशा राष्ट्रीय आंदोलन का दिशा-निर्देश किया।

राष्ट्र निर्माता, युगद्रष्टा, युगस्रष्टा के रूप में राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी का भारतीय इतिहास में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

शिमला सम्मेलन (SIMLA CONFERENCE)

इन प्रस्तावों पर विचार-विमर्श करने के लिए वायसराय ने शिमला में भारतीय नेताओं का एक सम्मेलन बुलाया। शिमला सम्मेलन 25 जून 1945 को शुरू हुआ। वस्तुतः यह गोलमेज सम्मेलन की भाँति था। वायसराय की घोषणा के अनुसार इसमें कांग्रेस और मुस्लिम लीग के अध्यक्षों, परिगणित जातियों और सिखों के प्रतिनिधियों, केन्द्रीय विधानसभा में कांग्रेस दल के नेता और मुस्लिम लीग के उपनेता, केन्द्रीय राज्य परिषद में कांग्रेस दल और मुस्लिम लीग के नेता, विधान सभा में नेशनलिस्ट पार्टी और यूरोपीय ग्रुप के नेता एवं उस वक्त की प्रान्तीय सरकारों के मुख्यमंत्री निमंत्रित किए गये थे। हिन्दू महासभा के निमंत्रण पत्र पाने की भी जिद्दा की, लेकिन वायसराय ने उसके दावे को स्वीकार न किया।

पहले दो दिनों में सम्मेलन ने सर्व सम्मति से अल्पमत वालों के प्रतिनिधित्व, शुद्ध प्रभासों का तहे दिल से समर्थन और भारत सरकार कानून के अन्तर्गत पुनर्गठित कार्यकारिणी परिषद का जारी रखना स्वीकार कर लिया, लेकिन कार्यकारिणी परिषद के गठन को लेकर कांग्रेस और लीग में मतभेद हो गए। अतः पहले दो दिन कार्य करने के पश्चात सम्मेलन दो दिन के लिए स्थगित हो गया और उसके बाद एक परवाड़े से भी अधिक दिनों तक सम्मेलन स्थगित रहा।

वेवेल ने 14 मन्त्रियों की कार्यकारिणी परिषद का प्रस्ताव रखा और कहा गया कि 5 नाम कांग्रेस और 5 नाम लीग दे। 4 नाम स्वयं वेवेल देंगे। कांग्रेस ने चन्द्रशेखर आजाद, नेहरू, पटेल एक पारसी और एक भारतीय ईसाई का नाम देना चाहा। वेवेल ने एक सिख, दो परिगणित जातियों और पंजाब के मुख्यमंत्री खिजिर हयात का नाम देना चाहा, लेकिन जिन्ना ने कहा कि मुसलमान नाम सिर्फ मुस्लिम लीग ही दे सकती है। दूसरा कोई नहीं। उन्होंने आजाद और खिजिर हयात खाँ के लिए जाने का विरोध किया। स्वाभाविक था कि सम्मेलन स्थगित हो गया। जब सम्मेलन 14 जुलाई को फिर प्रारंभ हुआ तो लार्ड वेवेल ने यह घोषित कर दिया कि नई कार्यकारिणी परिषद के निर्माण के प्रश्न पर कोई समझौता न होने के कारण सम्मेलन भंग हो गया।

'शिमला सम्मेलन' की असफलता का मुख्य कारण कांग्रेस और लीग में मतभेद ही था। जिन्ना की हठधर्मी के कारण साम्प्रदायिक समस्या पर कोई निर्णय नहीं हो सका। मौलाना आजाद के अनुसार "भारत